Hon'ble Sh.Parshottam Rupala, MoS(Agri.& FW & Panchayati Raj) during on 5-6 March at ICAR-NRC for Orchids, Darjeeling Centre

MoS assures Central assistance for Darjeeling orchids

Our Correspondent

DARJEELING, March 6: Parshottam Rupala, Minister of State for Agriculture & Farmer Welfare and Panchayati Raj, on Monday assured all Central assistance to make orchids of Darjeeling hills as a brand of the region.

The MoS was speaking at a workshop on orchid research and development here at Gorkha Ranga Manch Bhawan organised by Darjeeling campus of National Research Centre for Orchids (NRCO).

"Darjeeling is known for tea and now we want that the hills are also known through orchids. We will provide all support we can for this. The orchids from Darjeeling are also famous but infrastructure is need for its development. I will see to it personally that Government of India helps," said Rupala.

He pointed out that there is a good market for orchids and presently, India imports orchids from different places. He said there is a need for a marketing facility for orchids at Siliguri and a tissue culture centre in the hills for orchid cultivation.

Speaking on plans for farmers of Darjeeling hills, Rupala said: "A Krishi Kendra is there in Kalimpong but each district should have one such centre. I will give sanction if there is an administrative-level proposal for a Krishi Kendra in Darjeeling."

He said the Union government can provide loans to the farmers of the hills. He suggested the farmers to form cooperatives and self-help groups.

NRCO director D.R. Singh said a better infrastructure is need for orchid cultivation. "Kurseong is known as the land of white orchids while Pokhreybong is known for their Psymbodiam orchids but nothing has been done for the development of orchids. Orchids should also have crop insurance and like a tea board, an orchid board should also be there for growers. There are 1350 species of orchids in Darjeeling and Sikkim but there is no marketing area even though it is a commercial crop," said Singh.

आर्किड्स को विश्व बाजार में मार्केटिंग के लिए सक्षम बनाना है : रुपाला

दार्जिलिंग (निज संवाददाता)। केन्द्रीय कृषि राज्य, किसान कल्याण एवं पंचायती राज मंत्री पुरुषोत्तम भाई रुपाला ने कहा है कि आर्किड्स की जन्मभूमि को ही आर्किड्स के लिए बढ़ावा देकर विश्व बाजार में मार्केटिंग कराने में सक्षम बनाना है। आज स्थानीय गोर्खा रंगमंच भवन में भाकृ अनुप राष्ट्रीय आर्किड्स अनुसंधान केन्द्र, दार्जिलिंग कैम्पस के आयोजन में कार्यशाला का आयोजन किया गया। आयोजित कार्यक्रम के प्रमुख अतिथि भाई रुपाला ही थे। अन्य अतिथि गोरखालैंड क्षेत्रीय प्रशासन के वाइस चेयरमैन रवीन्द्र लामा, विभागीय सभासद कल्याण देवान और अन्य विभागीय अधिकारी विशेष रूप से मौजूद थे। कार्यक्रम के शुभारम्भ में अतिथियों को खादा एवं शॉल से सम्मानित किया गया। इसके साथ ही दीप प्रज्वलन आदि किया गया।

मंत्री पुरुषोत्तम भाई रुपाला को स्मृति चिन्ह प्रदान करते हुए।

समारोह को सम्बोधित करते हुए मंत्री रुपाला ने कहा कि मेरे दार्जिलिंग आने का मुख्य कारण नवनिर्मित भवन का उद्घाटन करना था और कर ही गया है। यहां आने के बाद और यहां के बारे में चर्चा करने का बाद आर्किड्स उत्पादन के क्षेत्र में यहां के लोगों को अभी तक किसी से किसी प्रकार का सहयोग एवं मदद नहीं मिली है। मैं इसको दुर्भाग्यपूर्ण मानता हूं और वादा करता हूं कि अगले साल आऊंगा और बताऊंगा कि भारत सरकार आपलोगों के लिए क्या कर सकती है।

उन्होंने यह भी कहा कि प्रधानमंत्री नरेन्द्र भाई मोदी की नीयत साफ है। इस बारे में आपलोगों को भी पता है कि उन्होंने प्रधानमंत्री बनने के बाद देश के किसानों की आय दोगुना करने का ऐलान किया है। रुपाला ने आगे कहा कि दार्जिलिंग को मैंने चाय का प्रदेश समझा था और मुझे भेंट में चाय का पैकेट ही दिया गया। इसलिये मैंने सोचा था कि चाय श्रमिकों को समस्याएं होंगी, देखूंगा, सुनूंगा परन्तु मैंने यहां आर्किड्स के बारे में सुना। उसके बारे में मैंने सिक्किम में भी सुना और देखा। सिक्किम के मुख्यमंत्री पवन चामलिंग की धर्मपत्नी ने भी व्यक्तिगत तौर पर आर्किड्स लगाया है। मैंने देखा और मुझे काफी खुशी भी मिली। मैंने आर्किड्स के बारे में काफी सुना और अध्ययन भी किया। मुझे पता चला कि इस आर्किड्स की खेती से लोगों को अच्छी-खासी आय हो रही है। इस बारे में कई देश अच्छी काम भी कर रहे हैं और इनमें थाईलैंड, इंडोनेशिया आदि का आर्थिक क्षेत्र में आर्किड्स का अच्छा प्रभाव है। इन सारे विषयों के जनक हम हैं और आर्किड्स की जन्मभूमि यहां है। यहां से पौधे लेकर चले गये और दुनिया भर में व्यापार कर रहे हैं। हमलोग देख रहे हैं और उसी देशों से आयात करके हमलोग अपने घरों की दीवारों को सजा रहे हैं और इनका दाम चुका रहे हैं।

उन्होंने कहा कि यह यहां भी हो सकता है और करने का हौसला भी है। यह बात मैं यहां कम बोलूंगा और और दूसरी क्षेत्रों में जाकर उन किसानों के बीच बोलूंगा, चालीस साल से किसी की मदद के बिना आर्किड्स उगा रहे हैं और इसको बचाए रखने के लिए इसकी खेती कर रहे हैं।

उन्होंने आगे कहा कि मैं यहां आर्किड्स खेती करने वाले किसानों की मदद करने के लिये आया हूं। आज से जो सहयोग होगा, वह मैं करने के लिये तैयार हूं। दार्जिलिंग जिले में कृषि विज्ञान केन्द्र बनाने के लिये मंत्री ने जीटीए को राज्य को आवेदन करने का आह्वान करते हुए कहा कि जैसे ही यहां कृषि विज्ञान केन्द्र का आवेदन उनके पास आयेगा, वे तुरन्त करने का वचन दिया है। भारत सरकार ने किसानों को सहयोग करने के लिये एक योजना बनाई है, जिसके तहत किसानों को आसानी से लोन मिल सकता है। यदि इसमें आपलोगों को किसी प्रकार के सहयोग की जरूरत है, तो मैं सहयोग करने के लिये तैयार हूं।

आर्किड्स के एक पौधे का मूल्य पचास से साठ रुपये होता है। चार-पांच हजार पौधे लगाने हैं, तो तीन लाख रुपये होंगे। यह बड़ी रकम नहीं है, लेकिन साधारण लोगों के लिये बहुत बड़ी रकम होती है। भारत सरकार से किसी तरह की योजना बनाने में अपने अधिकारियों से कहता हूं, वे इनलोगों को पौधे खरीदने के लिये लोन चाहिये, तो मैं सहयोग करने के लिये तैयार हूं। मैं दार्जिलिंग के किसानों को किसी तरह का सहयोग करने के लिये तैयार हूं और हिन्दुस्तान को आर्किड्स की खेती में दुनिया के मानचित्र पर लाना चाहता हूं। भारत सरकार आपके साथ है।

उन्होंने कहा कि कृषि मंत्रालय में आपके ही प्रतिनिधि एस.एस. अहलुवालिया हमारे साथ हैं। वे हमारे साथी हैं। इसलिये कृषि सम्बन्धित किसी भी विषय का समाधान करने के लिये सरल होगा। आज के समारोह में डी.आर. सिंह आदि ने भी सम्बोधित किया।

दार्जीलिङमा कृषि विज्ञान केन्द्र स्थापना गरिनेछ: केन्द्रिय कृषि राज्यमन्त्री

दार्जीलिङ ६ मार्च। केन्द्रीय कृषि, किसान एवं पञ्चायती राज राज्य मन्त्री पारषोत्तम भाइ रुपालाले दार्जीलिङमा कृषि विज्ञान केन्द्र स्थापना गर्ने वचन दिएका छन्। स्थानीय गोर्खा रङ्गमञ्च भवनमा राष्ट्रिय आर्किड्स अनुसन्धान केन्द्रको दार्जीलिङ क्याम्पसले आर्किड्माथि आयोजना गरेको कार्यशालामा प्रमुख अतिथिको रूपमा केन्द्रीय कृषि, किसान एवं पञ्चायती राज राज्य मन्त्री पारषोत्तम भाई रुपाला उपस्थित थिए। यसरी नै अन्य अतिथिहरूमा जीटीए सभाका भाईस चियरम्यान रविन्द्र लामा, विभागीय सभासद् कल्याण देवान आदि उपस्थित थिए। कार्यक्रमको शुभारम्भमा दीप जलन आदि जस्ता कार्यहरू गरियो त्यसपछि राष्ट्रिय आर्किडस अनुसन्धान केन्द्रको दार्जीलिङ प्रकाशित तीनवटा कार्य सूची पुस्तकहरूको लोकार्पण गरियो। आयोजित कार्यक्रमलाई सम्बोधन गर्दै मन्त्री रुपालाले कालेबुङ, दार्जीलिङ जिल्लाबाट अलग भएपछि दार्जीलिङमा पनि कृषि विज्ञान केन्द्र हुन आवश्यक रहेको बताउँदै यसबारे जीटीएले आवेदन गर्नुपर्ने अनि त्यो आवेदन आफूकहाँ आउनसाथ तुरुन्त स्वीकृति दिइहाल्ने मन्त्री रुपालाले बताए। दार्जीलिङ भन्नासाथ आफूले चियाको राज्य एवं प्रदेश भन्ने सोच्ने गरेको बताउँदै आयोजित कार्यक्रममा पनि आफूहरूलाई भेंटस्वरूप चियाकै प्याकेट दिएकोले आफ्नो सोच दार्जीलिङ चियाकै प्रदेश हो भन्ने पक्का भएको बताए तर कार्यक्रममा वक्ताहरूको कुरा सुनेर आफूहरू आश्चर्यचकित भएको बताउँदै आर्किडसको जन्म देशको पार्वतीय क्षेत्र एवं दार्जीलिङमा नै भएको आफूले बुझेको जनाए। दार्जीलिङ अनि सिक्किम आदि क्षेत्रहरूबाट नै निदरल्याण्ड, थाइल्याण्ड आदि जस्ता देशहरूमा लगेर अहिले ती देशहरूका मानिसहरूले लाखौं–करोडौं रुपियाँको आर्किडसहरू निर्यात गर्ने गर्छन् अनि ती आर्किडहरू आफूहरूले किन्ने गरेको बताए। तर यसको खेती दार्जीलिङ, सिक्किममा गरे अझ राम्रो हुने बताए। दार्जीलिङलाई अहिले चियाकै नामले चिन्ने गरिन्छ भोलिको दिनमा आर्किडस नामले पनि चिनोस् भन्ने मन्त्रीले मन्तव्य व्यक्त गरे। विगत केही अघि आफू सिक्किमको भ्रमणमा आएको अनि त्यस अवधि सिक्किमका मुख्यमन्त्री पवन कुमार चामलिङकी धर्म पत्नीले आर्किडस फूल फूलाएको देखेर आफू छक्क चकित बताए। मन्त्री रुपालाले आर्किडस कृषकहरूलाई आर्किडसको उत्पादनमाथि सक्दो सहयोग गर्ने वचन दिँदै प्रधानमन्त्री नरेन्द्र मोदीले किसानको आमात दुई गुणा बढाउने वचन पनि दिएको बताउँदै यसबारे आफूहरूले पनि काम गर्दै आइरहेको बताए। मन्त्री रुपालाले राष्ट्रिय आर्किडस अनुसन्धान केन्द्रको दार्जीलिङद्वारा निर्माण भवनको पनि उद्घाटन गरेको जानकारी गराउँदै आउने दिनमा दार्जीलिङका कृषकहरूका लागि धुप्रै साहुलियतहरू लिएर आउने वचन पनि दिए।

कालेबुङका आइसीएसइ विद्यालयहरूमा

Darjeeling orchid will be promoted on global scale, says minister

EOI CORRESPONDENT

DARJEELING, MARCH 6 /--/ The hills of Darjeeling are home to more than 400 varieties of orchid, but lack of post harvesting technology and proper marketing have become the bane in terms of the flower's export, both domestically and elsewhere, where demand is huge.

Parshottambhai Rupala, Union minister of state for agriculture, farmer welfare and panchayati raj, is on his maiden visit to the hills.

Today, he said every effort would be undertaken to globally establish the Darjeeling orchid and rebuild the region's economy that is primarily dependent on tea and tourism. "I was of the view that only tea cultivation takes place in Darjeeling. And I am surprised to know that orchid is also grown here. Countries such as Holland, Indonesia and Thailand have developed their economy on orchid cultivation. I think we can emulate these countries and Darjeeling can be the face of orchid export for our nation," the minister said. Rupala was invited by the National Research Centre for Orchids (NRCO), Darjeeling Campus to attend a day-long workshop on farmers' participation in orchid research and development at the Gorkha Ranga Mancha Bhawan. The minister said it was unfortunate that orchids were produced in the hills only for domestic use and that efforts would be made to put in place marketing strategies to help facilitate export.

"It is unfortunate that the orchids are grown only for domestic use. I think we need to market the produce properly to reap the benefits. I will try to ensure better marketing facility in Siliguri as it has proper connectivity and is the gateway to the North-east," Rupala said.

He also assured all help and support from the central government whose aim is to increase the income of Indian farmers by handing out loans. "In this budget, the central government has allotted Rs10 lakh crore towards loan for farmers. The question is how this amount is made available to farmers of this region. I suggest that you set up cooperatives and prepare projects and I will ensure funds get sanctioned immediately. You can call me every month to enquire about the progress," promised the minister. He also said a Krishi Vigyan Kendra and a tissue culture facility would be established in Darjeeling and asked the Gorkhaland Territorial Administration to get the state government's approval for land to house the infrastructure. Dr. Rampal, scientist in-charge of the NRCO, said Darjeeling has potential to develop as an orchid growing region. He said besides the domestic market, there is huge demand for orchids in the Middle East. "More than 400 varieties of orchids are grown in the areas of Kurseong, Pokhriabong and Mirik. The problem is lack of latest technology and proper marketing. We can develop orchid villages in clusters to facilitate collection, marketing and export systematically," he said. In the domestic market, especially in the metros, a single stick of orchid is priced at Rs150 to Rs200. When the same flower is exported, it fetches gets anything between Rs400 and Rs500. Niraj Chhetri, who exports orchids brought from Holland to markets in the Middle East, said lack of proper technology, marketing and post harvesting management were deterrents in developing Darjeeling as an orchid destination. "Quantity, quality and colour are three factors. As far as orchid cultivation in Darjeeling is concerned, we lack them here. We don't even have a cold storage facility, here. But these things can be addressed," he said.

पहाड़का अर्किड व्यवसायीलाई सहयोग गर्ने केन्द्रको आश्वासन

दार्जीलिङ, ६ मार्च (हिसं): ४० वर्षदेखि आफ्नो बलबुता साथै आफ्नो खर्चमा सरकारको सहयोगबिना अर्किडको व्यापारमा लागिपरेका दार्जीलिङ पहाडी क्षेत्रका अर्किड व्यापारीहरूलाई केन्द्र सरकारबाट जतिसक्दो सहयोग गर्ने आश्वासन केन्द्रीय राज्य कृषि तथा किसान कल्याण अनि पञ्चायती राजमन्त्री यशोन्त मशाह रुपालाले दिएका छन्। उनले दार्जीलिङ पहाड़मा भविष्यमा चिया व्यवसायको स्थान अर्किड व्यवसायले लिन सक्ने धेरै विचार व्यक्त गर्दै कृषि तथा पञ्चायती राज मन्त्रीले दार्जीलिङ जिल्ला क्षेत्रमा अर्किड टिस्यु केन्द्र, कृषि विज्ञान केन्द्र साथै शीतकरण भण्डार निर्माण गर्ने आश्वासन दिएका छन् भने आगामी दिनहरूमा यी केन्द्रहरूको उद्घाटन पनि उनले नै गर्न इच्छा पनि राखे। मन्त्री रुपालाले दार्जीलिङका अर्किड व्यवसायी तथा

—— रहल पृष्ठ ४ मा

पहाड़का अर्किड व्यवसायीलाई...

कृषकहरूलाई भारत सरकारको सहयोगले देशमा परिचय गराउने अनि कृषि क्षेत्रमा केन्द्र सरकार आर्थिक सहयोग गरेर विकास गर्ने विचार व्यक्त गरे। भारतीय कृषक अनुसन्धान परिषद अन्तर्गत रहेको राष्ट्रिय अनुसन्धान केन्द्र, दार्जीलिङ क्याम्पसको अपीलमा अर्किड अनुसन्धान विकासमा कृषकहरूको सहभागितामाथि कार्यशालालाई सम्बोधन गर्दै मन्त्री रुपालाले भने, महात्मा गान्धीले स्वच्छ भारतको सन्देशलाई देशमा लागु गराउन लगभग ७ वर्ष लगाए जुन अभियान प्रधानमन्त्री नरेन्द्र मोदीले राष्ट्रव्यापी चलाए। यस अभियानलाई दार्जीलिङ लगायत देशवासीले पालन गरे। यसरी नै दार्जीलिङ पहाडी क्षेत्रमा ४० वर्षदेखि सरकारको सहयोग बिना अर्किडको खेतीमा लागिपरेकाहरूलाई सहयोग गर्न आएको बताए। दार्जीलिङ पहाडी क्षेत्रमा अर्किडको खेतीले चियाखेतीको स्थान लिन सक्छ। उनले भने, दार्जीलिङ चिया खेतीमा प्रसिद्ध छ, तर त्यहाँ विश्व प्रसिद्ध फूल अर्किड खेती पनि राम्रो हुँदोरहेछ। यो भारतका निम्ति गर्वको कुरा हो। उनले भने, यस क्षेत्रमा कृषि विज्ञान केन्द्र र टिस्यू कल्चर केन्द्र खोलिनुपर्छ, कालेबुङमा भएको कृषि विज्ञान केन्द्र अब कालेबुङ जिल्ला विभाजन पछि छुट्टिएको छ। यसैले अब दार्जीलिङ जिल्लामा कृषि विज्ञान केन्द्रका निम्ति राज्यलाई अर्जी चढाएपछि त्यस अर्जीलाई भारत सरकारले तुरुन्तै अनुमोदन गर्ने त्यसको केन्द्रको उद्घाटनमा उपस्थित हुनेछु। उनले भने, स्वनिर्भर दलमार्फत पनि सरकारबाट सहयोग पाउने छ साथै यहाँ कोअपरेटिभ व्यवस्थाबाट पनि धेरै सहयोग पाइनेछ। भारत सरकारले पनि सहयोग गर्नेसक्छ। यसबारे म पनि सहयोग गर्नेछु। दार्जीलिङ किसानहरूलाई पनि ऋणको सहयोग गरिनेछ। दार्जीलिङका किसानहरूलाई राष्ट्रिय स्तरमा परिचय गराइनेछ। उनले भने, भारत सरकारसमक्ष यहाँको कृषि सम्बन्धी परियोजना प्राप्त भयो भने सरकारले गम्भीर भएर सोच्नेछ। यहाँका किसानहरूले दिल्लीमा पनि सम्पर्क गर्न सक्ने उनले बताए। यहाँका किसानहरूलाई केन्द्र सरकारले हरेक क्षेत्रमा सहयोग गर्नेछ। अर्किड व्यवस्थामा अन्तरराष्ट्रिय स्तरमा परिचय गराउने क्षमता दार्जीलिङका किसानहरूमा छ। भारत सरकार, प्रधानमन्त्री नरेन्द्र मोदी किसानसँग छन्।

गोर्खा रंगमञ्च भवनमा भएको अर्किड अनुसन्धान एवं विकासमा कृषकहरूको सहभागितामाथि कार्यशालामा अर्किड व्यवसायीहरूले भाग लिएका थिए भने उनीहरूले मन्त्रीसमक्ष विभिन्न माग गर्दै ज्ञापन चढाए। उनीहरूले पनि कार्यशालालाई सम्बोधन गरे। कार्यशालामा खरसाङ मिरिक अनि पोखेबुङ क्षेत्रका अर्किड व्यवसायीहरूले अर्किड प्रदर्शनीमा राखेका थिए। सब्जीहरूको प्रदर्शनी पनि राखिएको थियो। समारोहमा अर्किड व्यवसायीहरूले उनीहरूले भोग्नु परेको पीर र मर्काको गुनासो मन्त्रीसमक्ष राखे। समारोहमा जीटीएका डेपुटी चेयरम्यान रवीन्द्र लामा अनि कृषि विभागका सभासद् कल्याण देवान, आइसीएआर निर्देशक डा. डीआर सिंह, एनआरसीओ, डीसी डा. रामपाल आदि उपस्थित थिए। समारोहमा तीनवटा अर्किड सम्बन्धी पुस्तकहरूको विमोचन मन्त्रीले गरे।